श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

श्री यमुनाष्टकम्

मुरारिकायकालिमाललामवारिधारिणी,

तृणीकृतत्रिविष्टपा त्रिलोकशोकहारिणी।

मनोऽनुकूलकूलकुञ्जपुञ्जधूतदुर्मदा,

धुनोतु मे मनोमलं(ङ्) कलिन्दनन्दिनी सदा॥1॥

जो भगवान कृष्णचंद्र के अंगों की नीलिमा लिए हुए मनोहर जालौघ धारण करती है , त्रिभुवन का शोक हरने वाली होने के कारण स्वर्ग लोक को तृण के समान सारहीन समझती है, जिसके मनोरम तट पर निकुंजों का पुंज विद्यमान है, जो लोगों का दुर्मद दूर कर देती है , वह कालिंदी यमुना सदा हमारे आंतरिक मल को धोवे।

मलापहारिवारिपूरभूरिमण्डितामृता,

भृशं प्रपातकप्रवञ्चनातिपण्डितानिशम्।

सुनन्दनन्दनाङ्गसङ्गरागरञ्जिता हिता,

धुनोतु मे मनोमलं(ङ्) कलिन्दनन्दिनी सदा॥2॥

जो मलापहारी सलिल समूह से अत्यंत सुशोभित है ,मुक्तिदायक है, सदा ही बड़े-बड़े पातकों को लूट लेने में अत्यंत प्रवीण है, सुंदर नंदनंदन के अंगस्पर्शजनित राग से रंजित है , सबकी हितकारिणी है , वह कालिंदी यमुना सदा हमारे मानसिक मल को धोवे।

लसत्तरङ्गसङ्गधूतभूतजातपातका,

नवीनमाधुरीधुरीणभक्तिजातचातका।

तटान्तवासदासहंससंसृता हि कामदा,

धुनोतु मे मनोमलं(ङ्) कलिन्दनन्दिनी सदा॥3॥

जो अपनी सुहावनी तरंगों के संपर्क से समस्त प्राणियों के पापों को धो डालती है , जिसके तट पर नूतन मधुरिमा से भरे भक्तिरस के अनेकों चातक रहा करते हैं , तट के समीप वास करने वाले भक्त रूपी हंसों से जो सेवित रहती है और उनकी कामनाओं को पूर्ण करने वाली है , वह कलिंद- कन्या यमुना सदा हमारे मानसिक मल को मिटावे।

विहाररासखेदभेदधीरतीरमारुता,

गता गिरामगोचरे यदीयनीरचारुता।

प्रवाहसाहचर्यपूतमेदिनीनदीनदा,

धुनोतु मे मनोमलं(ङ्) कलिन्दनन्दिनी सदा॥4॥

जिसके तट पर विहार और रास - विलास के खेद को मिटा देने वाली मंद मंद वायु चल रही है, जिसके नीर की सुंदरता का वाणी द्वारा वर्णन नहीं हो सकता , जो अपने प्रवाह के सहयोग से पृथ्वी, नदी और नदों को पावन बनाती है, वह कलिंदनंदिनी यमुना सदा हमारे मानसिक मल को दूर करें।

तरङ्गसङ्गसैकताञ्चितान्तरा सदासिता,

शरन्निशाकरांशुमञ्जुमञ्जरीसभाजिता।

भवार्चनाय चारुणाम्बुनाधुना विशारदा,

धुनोतु मे मनोमलं(ङ्) कलिन्दनन्दिनी सदा॥5॥

लहरों से सम्पर्कित वालुकामय तट से जिसका मध्यभाग सुशोभित है, जिसका वर्ण सदा ही श्यामल रहता है, जो शरद् ऋतु के चंद्रमा की किरणमयी मनोहर मंजरी से अलंकृत होती है और सुंदर सलिल से संसार को संतोष देने में जो कुशल है, वह कलिंद- कन्या यमुना सदा हमारे मानसिक मल को नष्ट करे।

जलान्तकेलिकारिचारुराधिकाङ्गरागिणी,

स्वभर्तुरन्यदुर्लभाङ्गसङ्गतांशभागिनी।

स्वदत्तसुप्तसप्तसिन्धुभेदनातिकोविदा,

धुनोतु मे मनोमलं(ङ्) कलिन्दनन्दिनी सदा॥6॥

जो जल के भीतर क्रीड़ा करने वाली सुंदरी राधा के अंगराग से युक्त है, अपने स्वामी श्री कृष्ण के अंग स्पर्श सुख का , जो अन्य किसी के लिए दुर्लभ है, उपभोग करती है ,जो अपने प्रवाह से प्रशांत सप्त समुद्रों में हलचल पैदा करने में अत्यंत कुशल है, वह कालिंदी यमुना सदा हमारे आंतरिक मल को धोवे।

जलच्युताच्युताङ्गरागलम्पटालिशालिनी,

विलोलराधिकाकचान्तचम्पकालिमालिनी।

सदावगाहनावतीर्णभर्तृभृत्यनारदा,

धुनोतु मे मनोमलं(ङ्) कलिन्दनन्दिनी सदा॥7॥

जल में घुलकर गिरे हुए श्री कृष्ण के अंग राग से अपना अंग स्नान करती हुई सखियों से जिसकी शोभा बढ़ रही है, जो राधा की चंचल अलकों में गुंथी हुई चंपक माला से मालाधारिणी हो गई है, स्वामी श्री कृष्ण के भृत्य नारद आदि जिसमें सदा ही स्नान करने के लिए आया करते हैं , वह कलिंद कन्या यमुना सदा हमारे आंतरिक मल को धो डाले।

सदैव नन्दनन्दकेलिशालिकुञ्जमञ्जुला,

तटोत्थफुल्लमल्लिकाकदम्बरेणुसूज्ज्वला।

जलावगाहिनां(न्) नृणां भवाब्धिसिन्धुपारदा,

धुनोतु मे मनोमलं(ङ्) कलिन्दनन्दिनी सदा॥8॥

जिसके तटवर्ती मंजुल निकुंज सदा ही नंद नंदन श्री कृष्ण की लीलाओं से सुशोभित होते हैं , किनारे पर बढ़कर खिली हुई मल्लिका और कदम्ब के पुष्प पराग से जिसका वर्ण उज्ज्वल हो रहा है ,जो अपने जल में डुबकी लगाने वाले मनुष्यों को भवसागर से पार कर देती है , वह कलिंद कन्या यमुना सदा हमारे मानसिक मल को दूर बहावे।

।।इति श्रीमद् शंकराचार्यविरचितम् श्रीयमुनाष्टकम् सम्पूर्णम्।।